टोपी शुक्ला

लेखक परिचयः राही मासूम रज़ा

राही मासूम रज़ा का जन्म 1 सितंबर 1927 को उत्तर प्रदेश के गाजीपुर के गंगौली गाँव में हुआ। आप की आरंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। आपने अलीगढ़ विश्वविद्यालय से उर्दू साहित्य में पी.एच.डी करने के बाद कुछ साल वहीं अध्यापन कार्य किया। इसके बाद आप मुंबई चले गए, जहाँ आप ने सैकड़ों फिल्मों की पटकथा, संवाद, गीत आदि लिखे। प्रसिद्ध धारावाहिक 'महाभारत' की पटकथा आपने लिखी और बहुत प्रसिद्ध हुए।

आपके पूरे लेखन में आम हिंदुस्तानी की पीड़ा, दुख-दर्द, उसकी संघर्ष क्षमता की अभिव्यक्ति है। आपने जनता को बाँटने वाली शक्तियों, राजनीतिक दलों, व्यक्तियों, संस्थाओं का खुला विरोध किया। आपने संकीर्णताओं और अंधविश्वासों, धर्म और राजनीति के स्वार्थी गठजोड़ आदि को भी बेनकाब किया। राही जी का निधन 15 मार्च 1992 को हुआ।

पाठ परिचयः टोपी शुक्ला

इफ़्फ़न व टोपी की दोस्ती – इफ़्फ़न टोपी का पहला दोस्त था। टोपी के बिना इफ़्फ़न और इफ़्फ़न के बिना टोपी अधूरे हैं,बेमानीहैं। इफ़्फ़न का नाम सैयद जरगाम मुरतुज़ा व टोपी का नाम बलभद्र नारायण शुक्ला था।

इफ़्फ़न का घर – इफ़्फ़न के दादा-परदादा प्रसिद्ध मौलवी थे। उनके पिता सय्यद मुरतुजा हुसैन कलेक्टर थे। इफ़्फ़न की दादी रोज़नमाज़ की पाबंद थी। पूरब की रहने वाली थी और पूरबी बोली बोलती थी। दादी का विवाह मौलवी से हुआ था, इसलिए उसे नियम-कायदे मानने पड़ते थे। इसीलिए जबइफ़्फ़न के पिता का विवाह हुआ, उस समय कोई गाना-बजाना नहीं हुआ। परंतु जब इफ़्फ़न पैदा

हुआ, उस समय दादा की मृत्यु होचुकी थी, इसलिए उसने जी भर के जश्न मनाया।

इफ़्फ़न की दादी जमींदार की बेटी थी, इसलिए उसेघी, दूध बहुत पसंद था। पिता के घर जाती वखूबघी, दूध खाती।वैसा घी, दूध शहर (लखनऊ) में नहीं मिलता था।

इफ़्फ़न की दादी के माता-पिता के घर के सभी लोग बँटवारे के समय भारत छोड़कर पाकिस्तान के कराची नामक स्थान पर चले गए थे तथा उनका घर कस्टोडियममें चला गया था। दादी को अपनी मृत्यु से पहले अपने माता-पिता का घर याद आया।

इफ़्फ़नकी दादी का टोपी से लगाव – इफ़्फ़न की दादी इफ़्फ़न से तो प्रेम करती ही थी, उसे तरह-तरह की कहानियाँ सुनाती थी। दादी टोपी से भी प्रेम करती थी। टोपी जब भी इफ़्फ़न के घर जाता, वह दादी के पास बैठने की कोशिश करता।

टोपी के कारण टोपी के घर में हंगामा – एक दिन सब खाने की मेज पर बैठ कर खाना खा रहे थे। उस दिन टोपी के घर बैंगन का भुरता बना था, जो टोपी को अच्छा लगा। टोपी ने अम्मी शब्द इफ़्फ़न के घर सुना था। उसी शब्द का प्रयोग करते हुए टोपी ने अपनी माता से कहा, अम्मी! जरा बैंगन का भुरता। अम्मी शब्द सुनते ही टोपी के घर तूफान आ गया। टोपी की दादी को पता चला कि यह शब्द टोपी ने इफ़्फ़न से सीखा है। सभी घरवालों ने कहा– वो इफ़्फ़न के घर नहीं जाएगा। परंतु टोपी ने कहा– वो इफ़्फ़न के घर जरूर जाएगा। इधर टोपी को डाँट-फटकार लग रही थी, इसका फायदा उठाकर टोपी के बड़े भाई मुन्नी बाबू ने कहा कि उन्होंने टोपी को कबाब खाते देखा है, जबकि कबाब मुन्नी बाबू ने खाया था और टोपी ने उन्हें देख लिया था। उस दिन टोपी की खूब पिटाई हुई और टोपी बहुत उदास रहा।

VASUNDHARAHINDI.COM

टोपी के पिता को जब पता चला कि इफ़्फ़न कलेक्टर का पुत्र है, तो उन्होंने इनकी दोस्ती का लाभ उठाकर उनसे कपड़े और शक्कर का परमिट ले लिया।

इफ़्फ़न की दादी की मृत्यु – अगले दिन टोपी जब स्कूल गया, तो उसने इफ़्फ़न को सारा किस्सा सुनाया और टोपी ने इफ़्फ़न से कहा-क्या हम दादी नहीं बदल सकते? अभी वो बात कर ही रहे थे, उसी समय इफ़्फ़न के नौकर ने आकर सूचना दी कि उसकी दादी की मृत्यु हो गई है।

शाम को टोपी इफ़्फ़न के घर गया। घर में सब थे, बस दादी नहीं थी। दादी से टोपी बहुत प्यार करता था, क्योंकि दोनों अपने घर में अकेले थेऔर दोनों ने एक दूसरे के अकेलेपन को दूर किया था। एक बहत्तर वर्ष की थी तो दूसरा आठ वर्ष का था।

10 अक्टूबर 1945 का दिन – 10 अक्टूबर 1945 के दिन इफ़्फ़न के पिता का तबादला मुरादाबाद हो गया। टोपी अकेला रह गया। उसने प्रतिज्ञा की कि आगे से वह किसी ऐसे लड़के से दोस्ती नहीं करेगा जिसके पिता का तबादला हो जाता है।

नए कलेक्टर हरनाम सिंह आए। उनके तीन लड़के थे। टोपी जब उनके साथ खेलने पहुँचा, तो वो टोपी के साथ नहीं खेले, बल्कि उसके ऊपर अपना कुत्ता छोड़ दिया। टोपी के पेट में सात सुइयाँ लगी।

टोपी का घर की नौकरानी से लगाव – इफ़्फ़न के जाने के बाद टोपी बहुत अकेला हो गया। सर्दी में मुन्नी बाबू के लिए कोट का नया कपड़ा आया और टोपी के छोटे भाई भैरव के लिए भी नया कोट बना। टोपी को मुन्नी बाबू का कोट मिला, जो नया था और मुन्नी बाबू को पसंद नहीं आया था। टोपी ने कहा- वह उतरन नहीं पहने गा। उसने कोट नौकरानी के बेटे को दे दिया। इस पर टोपी की दादी से बहस हो गई और टोपी की माँ ने उसे खूब मारा। इसके बाद वह घर की बूढ़ी नौकरानी सीता के निकट हो गया, क्योंकि वो उसे प्यार करती थी।

टोपी का बार-बार फेल होना – टोपी जब पहली बार नवीं में फेल हुआ, उस वर्ष मुन्नी बाबू इंटरमीडिएट में प्रथम श्रेणी में पास हुए और भैरव छठी में पहुँच गया। पहले साल फेल इसलिए हुआ, क्योंकि घर का सामान लाने के लिए उसकी माँ बाज़ार भेज देती और उसकी कॉपियों के भैरव ने हवाई जहाज बनाकर उड़ा दिए थे। दूसरी बार टाइफ़ाइड के कारण फेल हो गया। दूसरी बार फेल होने पर जो बच्चे पहले सातवीं में थे, वे अब उसके साथ पढ़ रहे थे। कोई भी बच्चा अगर किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देता, तो मास्टर व्यंग्य करते- क्या बलभद्र की तरह इसी कक्षा में रहना है? टोपी किसी भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए हाथ खड़ा करता, तो मास्टर उसे यह कहकर अपमानित करते-अभी इन बच्चों से पूछ लें। तुम से अगले साल पूछ लेंगे। कक्षा के छात्र भी उसे अपमानित करते और कहते-हमारे साथ कहाँ घूम रहे हो? आठवीं के बच्चों के साथ खेलो। अगले साल उन्हीं के साथ तुम्हें पढ़ना है।

टोपी का निश्चय – अनेक मानसिक यातनाएँ सहने के बाद टोपी ने निश्चय कर लिया कि इस वर्ष जरूर पास होगा। टोपी के पिता इस वर्ष चुनाव में खड़े हुए थे। घर में हमेशा भीड़ रहती। इससे टोपी की पढ़ाई प्रभावित होती। अच्छा हुआ कि टोपी के पिता डॉ भृगु नारायण चुनाव में हार गए और टोपी इस बार पास हो गया एवं दसवीं में पहुँच गया।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1) इफ़्फ़न टोपी शुक्ला की कहानी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा किस तरह से है?

उत्तर- इफ़्फ़न टोपी का मित्र था। यद्यपि इफ़्फ़न और टोपी का धर्म अलग-अलग था, दोनों का विकास अलग-अलग पारिवारिक परंपराओं में हुआ था, फिर भी उनके विचार एक जैसे थे। इसलिए उनका धर्म, संप्रदाय और परंपराएँ उनकी दोस्ती में बाधक नहीं थी।

प्रश्न 2) इफ़्फ़न की दादी अपने पीहर क्यों जाना चाहती थी?

उत्तर- दादी का विवाह लखनऊ में एक मौलवी से हुआ था। यहाँ उसे मौलवीन बनकर रहना पड़ता था, जो उसे बिल्कुल पसंद नहीं था। वह एक जमींदार की बेटी थी। उसे घी पिलाई काली हँडियाँ की दही याद आती, जो लखनऊ में नहीं मिलती थी। उसे अपने हाथ से लगाया बीजू आम याद आता, उसके मीठे फल याद आते। गाँव का अपनापन याद आता, जहाँवह मौलवीन नहीं होती थी। इसीलिए वह अपने पीहर जाना चाहती थी।

प्रश्न 3) दादी अपने बेटे की शादी में गाने-बजाने की इच्छा पूरी क्यों नहीं कर पाई?

उत्तर- दादी अपने पुत्र की शादी में हिंदी घरों की तरह गाना-बजाना करना चाहती थी, परंतु वह एक मौलवी की पत्नी थी। मुसलमान घरों में शादी के समय गाना-बजाना नहीं होता। फिर मौलवी के घर गाना-बजाना कैसे हो सकता था?

प्रश्न 4) अम्मी शब्द पर टोपी के घर वालों की क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर- एक दिन टोपी खाने की मेज पर अपने घर वालों के साथ खाना खा रहा था तथा खाने में बैंगन का भुरता बना था और टोपी को वह अच्छा लगा। उसने अपनी माँ से कहा-अम्मी! जरा बैंगन का भुरता। टोपी के अम्मी कहने पर घर में तूफान आ गया। टोपी से पूछा गया- यह शब्द उसने कहाँ से सीखा? टोपी को इफ़्फ़न के घर जाने से मना किया गया और जब टोपी ने कहा- वह इफ़्फ़न के घर जरूर जाएगा, इस पर टोपी की खूब पिटाई हुई।

प्रश्न 5) दस अक्टूबर सन्पैंतालीस का दिन टोपी के जीवन में क्या महत्त्व रखता है?

उत्तर- दस अक्टूबर सन्पैंतालीस का दिन टोपी के जीवन में इसलिए महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि इस दिन इफ़्फ़न के पिता का तबादला मुरादाबाद हो गया। टोपी का प्रिय मित्र उससे दूर चला गया और वह अकेला रह गया। इसलिए दुखी होकर उसने प्रतिज्ञा की कि वह अब किसी ऐसे लड़के से दोस्ती नहीं करेगा, जिसके पिता का तबादला हो जाता है।

प्रश्न 6) टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात क्यों कही?

उत्तर- टोपी को इफ़्फ़न की दादी से बहुत प्रेम था, क्योंकि टोपी को उनकी दादी की बोली, अपनापन और भोलापन बहुत अच्छा लगता था। टोपी की दादी सदा टोपी की उपेक्षा करती थी। इफ़्फ़न की दादी उसे असली रूप में दादी लगती थी, इसीलिए टोपी इफ़्फ़न से दादी बदलना चाहता था।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 7) पूरे घर में इफ़्फ़न को अपनी दादी से ही विशेष स्नेह क्यों था?

उत्तर- वैसे तो इफ़्फ़न घर के सभी सदस्यों से स्नेह करता था, पर दादी से विशेष स्नेह करता था, क्योंकि उसे अम्मी व बाजीवजह कभी-कभी डाँट देती थी। अब्बू भी कभी-कभी घर को कचहरी समझ कर फैसले सुनाते थे। छोटी बहन नुज़हत मौका मिलते ही उसकी कॉपियों पर तस्वीरें बनाने लगती थी। बस दादी ही ऐसी थी, जिसने कभी उसका दिल नहीं दुखाया था। दादी रात को अक्सर उसे बहराम डाकू, अनारपरी, हातिमताई आदि की कहानियाँ सुनाया करती थी।

प्रश्न 8) इफ़्फ़न की दादी के देहांत के बाद टोपी को उसका घर खाली-सा क्यों लगा?

उत्तर- इफ़्फ़न की दादी के देहांत के बाद जब टोपी उसके घर गया, तो उसे वहाँ सन्नाटा लगा। जबकि घर में सभी सदस्य थे, पर दादी नहीं थी। दादी से उसे बहुत प्यार व अपनापन मिला था। दादी अपने आप को अकेला समझती थी तथा टोपी को भी अकेलापन लगता था। उसके इस अकेलेपन को दादी ने दूर किया था, इसीलिए दादी के देहांत के बाद टोपी को इफ़्फ़न का घर खाली-सा लगा।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 9) टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मजहब और जाति के थे, पर एक अनजान, अटूट रिश्ते से बंधे थे। इस कथन के आलोक में अपने विचार लिखिए।

उत्तर- टोपी और इफ़्फ़न की दादी का मजहब अलग-अलग था। यहाँ तक कि टोपी ने कभी इफ़्फ़न की दादी से लेकर कुछ खाया भी नहीं था, परंतु दोनों एक दूसरे से प्रेम व अपनेपन के बंधन से बंधे थे। इसके बीच इनके धर्म और जाति नहीं आते थे। दादी को व टोपी को जो अपनापन अपने घर में नहीं मिला, वह उन्हें एक-दूसरे के साथ में मिला। क्योंकि इंसानियत का कोई मज़हब, जाति नहीं होती। वे उसी इंसानियत के बंधन से बंधे थे।

प्रश्न 10) टोपी नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया। बताइए:-

क) जहीन होने के बावजूद भी कक्षा में दो बार फ़ेल होने के क्या कारण थे?

ख) एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को किन भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

ग) टोपी की भावनात्मक परेशानियों को मध्यनजर रखते हुए शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक बदलाव सुझाइए।

उत्तर-क) टोपी जहीन (बुद्धिमान) था, फिर भी दो बार फ़ेल हो गया। पहली बार इसलिए फ़ेल हुआ- जब पढ़ने बैठता, मुन्नी बाबू उसे कोई काम बता देते, या माँ नौकरानी से सामान न मँगवा कर टोपी को सामान लाने बाज़ार भेज देती। छोटे भाई भैरव को जैसे ही अवसर मिलता, वह टोपी की कॉपियाँ फाड़ कर उसके हवाई जहाज बनाकर उड़ा देता। दूसरी बार फेल इसलिए हुआ, क्योंकि उसे टाइफ़ाइड हो गया था।

ख) दो बार फेल होने के बाद टोपी को भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। जब कक्षा का कोई छात्र प्रश्न का उत्तर नहीं देता, तो अध्यापक कहते- क्या तुम्हें टोपी की तरह इसी कक्षा में बैठना है। टोपी के पहली बार फ़ेल होने पर उसके साथ कक्षा में पढ़ने वाले दसवीं कक्षा में चले गए। वह कक्षा में उन बच्चों के साथ बैठता जो आठवीं में पढ़ते थे। दूसरी बारफ़ेल होने पर वह सातवीं में पढ़ने वाले बच्चों के साथ बैठता। अध्यापक उससे प्रश्न का उत्तर नहीं पूछते, बल्कि कहते- तुमसे अगले साल पूछेंगे। अक्सर उन्हें अपनी कक्षा में पढ़ने वाले छात्रों से अपमानित होना पड़ता।

ग) जैसे टोपी को फेल होने के बाद भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा, वैसे ही अन्य विद्यार्थी जो फ़ेल हो जाते हैं, उन्हें भी भावनात्मक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए शिक्षा व्यवस्था में कुछ सुधार आवश्यक हैं:

1. किसी भी विद्यार्थी को वार्षिक परीक्षा परिणाम देखकर पास-फ़ेल नहीं करना चाहिए, बल्कि उसके पूरे साल के कार्य को देखना चाहिए।
2. पढ़ाई में कमजोर छात्रों का अध्यापकों को मजाक नहीं उड़ाना चाहिए, बल्कि उन्हें उत्साहित करना चाहिए।
3. विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक होना चाहिए, जो बच्चों की समस्याओं को समझ सके और आवश्यकता होने पर विद्यार्थियों के माता-पिता का भी मार्गदर्शन किया जा सके।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 11) इफ़्फ़न की दादी का घर कस्टोडियम में क्यों चला गया?

उत्तर- जिस मकान का कोई मालिक नहीं होता, उस घर को सरकार अपनी कस्टडी में ले लेती है।

इफ़्फ़न की दादी शादी के बाद लखनऊ चली आई और भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद दादी के घर के सभी लोग भारत छोड़कर पाकिस्तान चले गए थे। अब उस घर का कोई मालिक नहीं था, इसीलिए दादी का घर कस्टोडियम में चला गया।

प्रश्न 12) टोपी सरल स्वभाव का था, फिर भी उसकी दोस्ती नए कलेक्टर के लड़कों के साथ नहीं हो सकी। कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इफ़्फ़न भी कलेक्टर का लड़का था, परंतु सरल स्वभाव का था। इसलिए सरल स्वभाव के टोपी से उसकी दोस्ती होगई। इसके विपरीत नए कलेक्टर हरनाम सिंह के बच्चों को पता था कि वे कलेक्टर के बेटे हैं और इस बात का उन्हें घमंड भी था। जब टोपी उनसे दोस्ती करने पहुँचा, तो टोपी उन्हें गँवार लगा। उनकी टोपी से लड़ाई हो गई। उन्होंने टोपी पर अपना कुत्ता छोड़ दिया और टोपी के पेट में सात सुइयाँ लगी।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 13) टोपी शुक्ला पाठ के माध्यम से लेखक ने मानवीय संबंधों की कौन सी सच्चाई उजागर की है?

उत्तर- जहाँ मानवीय संबंध होते हैं, वहाँ भाषा, धर्म, संप्रदाय और उम्र की दीवारें आड़े नहीं आती। इफ़्फ़न व उसकी दादी मुसलमान थे और टोपी हिंदू, पर वे एक भावनात्मक रिश्ते से बंधे थे। टोपी को जो प्यार अपनी दादी से नहीं मिलता था, वह इफ़्फ़न की दादी से मिलता था। टोपी भावनात्मक रूप से अपने भाइयों से नहीं, बल्कि इफ़्फ़न से जुड़ा हुआ था। टोपी इफ़्फ़न से अपने दिल की सारी बातें करता था। टोपी की जब खूब पिटाई हुई कि वह इफ़्फ़न के घर न जाए, पर टोपी इफ़्फ़न के घर जाता रहा। इससे पता चलता है कि जहाँ मानवीय संबंध होते हैं, वहाँ स्वार्थ के लिए कोई स्थान नहीं होता। वहाँ केवल प्रेम व अपनापन होता है।

प्रश्न 14) सच्चा मित्र जीवन की अनुपम निधि होता है। टोपी शुक्ला और इफ़्फ़न का उदाहरण देते हुए अपने विचार लिखें।

उत्तर- टोपी और इफ़्फ़न की सच्ची दोस्ती अनुपम थी। दोनों अलग-अलग धर्म के थे परंतु एक दूसरे के बिना अधूरे थे। टोपी को जो अपनापन अपने भाइयों से नहीं मिला, वह उसे इफ़्फ़न से मिला। अम्मी कहने पर जब टोपी की पिटाई हुई, तब उसने सारा किस्सा इफ़्फ़न को बताया। इफ़्फ़न के पिता का जब मुरादाबाद तबादला हो गया, तो उसने कसम खाई कि वह आगे से किसी ऐसे लड़के से दोस्ती नहीं करेगा, जिसके पिता का तबादला हो जाता है। क्योंकि इफ़्फ़न के जाने के बाद टोपी अपने आप को अकेला समझ रहा था।

प्रश्न 15) असफलताएँ हमें जीवन में बहुत कुछ सीखने का अवसर देती हैं। अपने जीवन की किसी घटना का उल्लेख करते हुए टोपी शुक्ला पाठ के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर- असफलताएँ जीवन में बहुत कुछ सिखाती हैं। मैं भी एक बार कक्षा आठ में फ़ेल हो गया और खूब निराश हो गया। ऐसे लगता सब मेरा मजाक उड़ा रहे हैं। मैंने घर से बाहर निकलना बंद कर दिया और किसी से बात करना मुझे अच्छा नहीं लगता था। ऐसे में मेरी माता जी ने मुझे समझाया और कहा- असफलता से घबराना नहीं चाहिए। अपनी गलती से सीखो और उसे सुधारो। मुझे माँकी बात समझ आ गई। मैंने अपनी गलतियाँ सुधारी और कड़ी मेहनत की। इस बार न केवल पास हुआ, बल्कि बहुत अच्छे नंबर भी आए। इसके बाद मुझे मेहनत करना आ गया और मैंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

टोपी शुक्ला पाठ में टोपी दो बार फ़ेल होता है। कक्षा और घर में अपमानित होता है और निश्चय कर लेता है कि अब फ़ेल नहीं होगा। इस प्रकार विपरीत परिस्थितियों पर विजय पाकर वह पास हो जाता है। हम कह सकते हैं जहाँ चाह है, वहाँ राह है।

*****